नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

मजबूत साइबर सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता मिले

डिजिटल इंडिया के विस्तार के साथ साइबर सुरक्षा की चुनौतियां भी गंभीर होती जा रही हैं. हाल ही में भारतीय स्टेट बैंक के ग्राहकों की जानकारी डार्क वेब पर पहुंचने और सरकारी वेबसाइटों की सुरक्षा से जुड़े ई-मुद्रा कंपनी के आठ गोपनीय डिजिटल प्रमाणपत्र उजागर होने के मामले ने इस खतरे की गंभीरता फिर सामने ला दी है. ये घटनाएं बताती हैं कि डिजिटल सेवाओं के विस्तार और नागरिकों के डाटा की सुरक्षा के बीच अब भी बड़ी खाई है. इसे दूर करना सरकार, बैंकों और साइबर सुरक्षा से जुड़ी संस्थाओं की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए.

राहत की बात यह है कि भारतीय स्टेट बैंक ने स्पष्ट किया है कि उसके सूचना प्रौद्योगिकी तंत्र, कारोबारी संचालन और वित्तीय प्रदर्शन पर इसका प्रभाव नहीं पड़ा है तथा ग्राहकों का पैसा सुरक्षित है. हालांकि केवल धनराशि सुरक्षित होने से ग्राहकों की चिंता दूर नहीं हो जाती. व्यक्तिगत जानकारी का दुरुपयोग भी गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है.ऐसी जानकारियों के आधार पर साइबर अपराधी ग्राहकों को निशाना बनाकर फर्जी फोन कॉल, संदेश और ईमेल के जरिए बैंक खाते, ओटीपी तथा अन्य गोपनीय विवरण हासिल कर सकते हैं. पहचान की चोरी और वित्तीय धोखाधड़ी का खतरा भी बढ़ जाता है. इसलिए डाटा लीक को केवल तकनीकी चूक मानकर नहीं छोड़ा जा सकता. यह ग्राहकों की निजता, आर्थिक सुरक्षा और बैंकिंग व्यवस्था पर उनके भरोसे से जुड़ा मामला है.

इसी तरह, बेंगलुरु की ई-मुद्रा कंपनी के आठ डिजिटल प्रमाणपत्रों से जुड़े गोपनीय कोड उजागर होने की घटना भी कम चिंताजनक नहीं है. सरकारी विभागों और सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक में ऐसी खामी से फर्जी वेबसाइटों को असली जैसा दिखाकर लोगों को भ्रमित करने का खतरा पैदा हो सकता था. कंपनी के अनुसार, तकनीकी गलती से ये कमजोर कोड बने थे. प्रभावित प्रमाणपत्रों को रद्द करने और संबंधित प्रमाणपत्रों को अविश्वसनीय घोषित करने की कार्रवाई महत्वपूर्ण है. हालांकि, इससे यह सवाल समाप्त नहीं होता कि ऐसी खामी समय रहते पकड़ में क्यों नहीं आई.

बहरहाल, भारत में बैंकिंग, सरकारी सेवाओं, डिजिटल भुगतान और पहचान संबंधी सुविधाओं का तेजी से विस्तार हुआ है. इससे नागरिकों को सुविधा मिली है, लेकिन साथ ही उनके डाटा की सुरक्षा का दायित्व भी बढ़ा है. साइबर अपराधी लगातार नए तरीके अपना रहे हैं. ऐसे में केवल घटना सामने आने के बाद जांच शुरू करना या चेतावनी जारी करना पर्याप्त नहीं है. नियमित सुरक्षा ऑडिट, कमजोरियों की समयबद्ध पहचान, एन्क्रिप्शन, प्रमाणपत्रों की निगरानी और त्वरित प्रतिक्रिया की व्यवस्था मजबूत करनी होगी. सरकारी विभागों और वित्तीय संस्थानों के तकनीकी साझेदारों की जवाबदेही भी तय होनी चाहिए.

सबसे महत्वपूर्ण यह है कि साइबर सुरक्षा को खर्च बचाने या तकनीकी औपचारिकता का विषय न माना जाए. इसके लिए प्रशिक्षित विशेषज्ञों, आधुनिक तकनीक और संस्थागत समन्वय में पर्याप्त निवेश जरूरी है. डाटा लीक की निष्पक्ष जांच हो, जिम्मेदारी तय की जाए और प्रभावित ग्राहकों को समय पर स्पष्ट जानकारी दी जाए. दरअसल,डिजिटल व्यवस्था की विश्वसनीयता केवल उसकी गति और सुविधा से नहीं, बल्कि उसकी सुरक्षा से तय होती है. यदि नागरिकों की निजी जानकारी ही सुरक्षित नहीं रहेगी, तो डिजिटल सेवाओं पर भरोसा कमजोर होगा. इसलिए साइबर सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर ऐसी व्यवस्था बनानी होगी, जिसमें तकनीकी खामी की पहचान समय रहते हो और लापरवाही की कीमत नागरिकों को न चुकानी पड़े.

महाकौशल की डायरी

भाजपा की मुश्किलें बढ़ा रहे उसके ही पार्षद, संगठन मौन...?

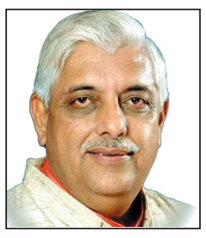

अविनाश दीक्षित

नगरीय निकाय चुनाव के लिए वक्त कम बचा है लिहाजा वार्ड स्तर पर सियासी पैंतरेबाजी शुरू हो गई है. कटनी नगर निगम में पिछले चुनाव में जनता ने भाजपा को आईना दिखाते हुए निर्दलीय प्रीति सूरी को महापौर की कुर्सी पर बैठा दिया, यद्यपि विकास कार्यों को गति देने के नाम पर कुछ वक्त उपरांत उन्होंने भाजपा का दामन थाम लिया. अब तक के कार्यकाल में सूरी ने सभी वार्ड में विकास कार्य कराने पर पूरा जोर भी लगाया, बावजूद इसके वह अपनी ही पार्टी के पार्षदों के सियासी हमलों का सामना करतीं रहीं. आलम यह रहा कि सदन की बैठकों में जो काम विपक्षी पार्षदों को करना चाहिए वह काम भाजपा के पार्षद करते रहे और यह सिलसिला बदस्तूर जारी है.

बीते सप्ताह भी कुछ ऐसा नजारा फिर दिखाई दिया. दरअसल इंदिरा गांधी वार्ड के पार्षद ओमप्रकाश उर्फ बल्ली सोनी ने उनके वार्ड में विकास कार्य न होने का आरोप लगाते हुए निगम अध्यक्ष को इस्तीफा सौंप दिया. खबर है कि निगमाध्यक्ष ने बल्ली सोनी को इस्तीफा लौटा दिया. इसके बाद पार्षद सोनी का मीडिया के समक्ष बयान आया कि वह अब कलेक्टर को इस्तीफा सौंपेगें, किन्तु कई दिन बीतने के बाद भी वह इस कार्य को कर नहीं पाए हैं. नगर निगम गलियारों में अब सवाल पूछा जा रहा है कि यदि ओमप्रकाश बल्ली सोनी को इस्तीफा देना ही था तो वह सीधे कलेक्टर को सौंप देते, ताकि संभागायुक्त इसे स्वीकार कर लेते. चर्चाओं में यह बात भी हो रही है कि अगर वह इस्तीफा देने की हद तक असंतुष्ट रहे तो फिर चार साल तक इंतजार क्यों करते रहे..

दरअसल कटनी नगर निगम में अब तक भाजपा पार्षद दो गुटों में बंटे हुए नजर आए हैं. एक गुट जहां महापौर प्रीति सूरी के साथ साथ खड़ा नजर आता है तो दूसरे गुट को नगर निगम के ही शीर्ष जनप्रतिनिधि का सहारा मिलता रहा है. यही वजह है कि नगर निगम सदन में जब भी बैठकें हुईं, ज्यादातर हंगामाखेज रहीं, जिनमें अनुशासनहीनता के दृश्य भी देखे गए. पार्षद ओमप्रकाश सोनी का इस्तीफा अब भी चर्चाओं के केंद्र में है, कोई इसे राजनैतिक ड्रामेबाजी बता रहा है तो कोई इसे आने वाले चुनाव में संभावित पराजय से जोड़ रहा है. इन सबके बीच सवाल भाजपा के जिला संगठन पर भी उठाए जा रहे हैं, पूछा जा रहा है कि नगर निगम में अपनी ही पार्टी की फजीहत जिलाध्यक्ष को दिखाई क्यों नहीं पड़ रही है? फिलहाल भाजपा पार्षदों की गुटबाजी के बीच कांग्रेस न केवल सत्तापक्ष पर हमलावर है, बल्कि सियासी लाभ लेने की जुगत में जुट गई है.

आखिर विधायक को इतना दर्द क्यों हुआ..?



हमेशा अपने बयानों के कारण सुर्खियों में रहने वाले भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता, प्रदेश सरकार में कैबिनेट मिनिस्टर रह चुके और वर्तमान में पाटन विधानसभा क्षेत्र के विधायक अजय विश्नोई एक बार फिर से चर्चाओं का केंद्र बने..इस बार वजह नगर निगम आयुक्त आईएएस ऑफिसर रामप्रकाश अहिरवार को लेकर सोशल मीडिया में की गई पोस्ट रही. पोस्ट में उन्होंने राज्य सरकार द्वारा भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों के तबादले पर व्यंग तीर चलाया और लिखा कि दशहरे के दिन जबलपुर के राम का हरण हो गया....बस फिर क्या था विधायक के फेसबुक पेज पर की गई इस पोस्ट पर बहुत सारी प्रतिक्रियाएं सामने आईं..किसी ने इसका विरोध किया तो किसी ने विधायक पर ही तंज कसा. तीखी प्रतिक्रियाएं सामने आने के बाद अंत में विधायक को ये पोस्ड डिलीट करनी पड़ गई. विदित हो कि कुछ दिन पहले नगर निगम कमिश्नर रामप्रकाश अहिरवार का तबादला भोपाल हो गया. उधर कांग्रेस व अन्य संगठन से जुड़े नेताओं ने भी भाजपा विधायक पर निशाना साधा और स्पष्ट प्रतिक्रियाएं दीं कि नेताजी राजनीति से भगवान के नाम को तो कम से कम दूर रखो... इस प्रतिक्रिया से ये तो साफ था कि राजनैतिक मैदान की जंग में विधायक को घेरने का प्रयास शुरू हो चुका है. खबर है कि विधायक के कहने पर मातहत ने जो पोस्ट की उसे भी नेताजी की खूब खरी खोटी सुनने को मिली. जिसके बाद मजबूर मातहत ये कहता भी नजर आया कि साहब इसमें मेरी क्या गलती है आपने जो कहा उसे मैंने पोस्ट कर दिया. कुल मिलाकर इस पूरे मामले ने एक बार फिर से ये स्पष्ट किया कि राजनीति जब शुरू होती है तो फिर उसमें धर्म हो या आस्था सारे दांवपेंच नेताओं द्वारा लगाने शुरू कर दिए जाते हैं. खबर तो ये भी है कि जिस आई ए एस के लिए ये पोस्ट की गई उन्हें भी इस पोस्ट से काफी धक्का लगा है क्योंकि साहब ने विधायक जी के कई काम चुटकी में करवाए थे और फिर विधायक ने उन्हें चर्चाओं का केंद्र बना दिया. विरोधी खेमे में चर्चाएं तेज ये भी थीं कि विधायक को आखिर इतना दर्द क्यों हो रहा है, ये तो प्रशासनिक फेरबदल का एक हिस्सा था कि साहब का ट्रांसफर हो गया.

बदलते राजनीतिक परिदृश्य ने बदला संघ का मिजाज


प्रवेश कुमार मिश्र

> राजनीतिक जानकार बताते हैं कि संघ के रणनीतिकार यह भली-भांति मानते हैं कि जब देश के भीतर या बाहर से संगठन की वैचारिक प्रासंगिकता और उसके मूल अस्तित्व पर ही सीधे हमले किए जा रहे हों, तो वह मूकदर्शक नहीं रह सकता. हाल के वर्षों में विपक्ष के शीर्ष नेतृत्व द्वारा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सीधे संघ प्रमुख और संघ की संस्थागत संरचना को घेरने की जो निरंतर कोशिशें की गईं, उसने संघ को अपनी पारंपरिक रक्षात्मक व तटस्थ मुद्रा छोड़ने पर मजबूर किया. संघ इसे केवल भाजपा की राजनीतिक हार-जीत के चश्मे से नहीं देखता, बल्कि जब उसे लगा कि विपक्ष का यह आक्रामक रूख उसकी अपनी वैचारिक जमीन और सौ वर्षों के सामाजिक समरसता के काम को कमजोर कर रहा है, तब संघ प्रमुख ने अपनी ही परिपाटी से हटकर पलटवार करना उचित समझा.

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के ऐतिहासिक मोड़ पर संघ प्रमुख मोहन भागवत का विजयादशमी संबोधन मौजूदा राजनीतिक दौर में एक नए वैचारिक और रणनीतिक अध्याय की शुरुआत का संदेश बन गया है. ऐतिहासिक रूप से संघ इस मंच से अमूमन प्रत्यक्ष राजनीतिक टिप्पणियों से परहेज करता रहा है, उसने न तो कभी खुद को किसी सरकार के रक्षा कवच के रूप में प्रस्तुत किया और न ही घरेलू विपक्ष पर इस तरह सीधा प्रहार किया.

पिछले बारह वर्षों के इतिहास को भी देखें तो संघ ने हमेशा खुद को एकपक्षीय दलीय राजनीति से ऊपर एक वैचारिक मार्गदर्शक के रूप में स्थापित रखने का सचेत प्रयास किया है. लेकिन इस बार जिस आक्रामकता के साथ संघ प्रमुख ने वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य और विपक्षी नैरेटिव पर चोट की है, उसने स्वाभाविक रूप से एक बड़े देशव्यापी बौद्धिक विमर्श को जन्म दे दिया है. ऐसे में यह यक्ष प्रश्न उठना लाजिमी है कि क्या विपक्षी आक्रमण की धार इतनी तीक्ष्ण हो चुकी है कि संघ को अपनी पारंपरिक तटस्थ परिपाटी छोड़कर सरकार के प्रति रक्षात्मक और विपक्ष के प्रति आक्रामक रुख अपनानेको बाध्य होना पड़ा है?

राजनीतिक विश्लेषक बता रहे हैं कि वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव के ठीक बाद संघ प्रमुख ने सत्ता-जनित अहंकार के प्रति आगाह करते हुए विपक्ष को शत्रु के बजाय लोकतंत्र का दूसरा पहलू बताया था. लेकिन हालिया समय में ऐसा बहुत कुछ बदला है जिसने संघ को अपने रुख को अप्रत्याशित रूप से आक्रामक अंदाज देने पर विवश किया. जानकारों का मानना है कि संघ प्रमुख का यह रुख न तो सरकार की लाचारी का प्रमाण है और न ही सत्ता प्रतिष्ठान को संघ का बिना शर्त समर्थन है. बल्कि यह भारतीय राजनीति के उस नए यथार्थ की गवाही है जहाँ विपक्ष की बढ़ती सांगठनिक ताकत और आक्रामक सामाजिक नैरेटिव ने भाजपा और संघ, दोनों ही शीर्ष स्तंभों को यह अहसास करा दिया है कि अलग-अलग रहकर वे इस वैचारिक युद्ध को नहीं जीत सकते. संभवत: इसी वजह से पिछले 12 वर्षों के संतुलन को दरकिनार कर संघ ने जो यह नया रास्ता चुना है, वह वास्तव में संकट के समय खुद आगे बढ़कर पूरे राष्ट्रीय विमर्श को अपने नियंत्रण में लेने की एक सोची-समझी बिसात है. इस चक्रव्यूह में सरकार को जहाँ एक मजबूत वैचारिक कवच मिल गया है, वहीं संघ ने यह साबित करने का प्रयास किया है कि चुनावी राजनीति की चाबी भले ही सत्ताधारी दल के पास हो, लेकिन देश की वैचारिक दिशा तय करते समय वह अग्रिम पंक्ति में खड़ा है.

इस बदलते परिदृश्य के पीछे एक गहरा चुनावी गणित भी छिपा है. वर्ष 2024 के चुनावी अभियानों के दौरानजब सत्ताधारी दल के कुछ शीर्ष नेताओं द्वारा यह कह दिया गया था कि पार्टी अब आत्मनिर्भर है और उसे संघ के सहारे की उतनी आवश्यकता नहीं है, तब संघ के जमीनी कैडर में एक स्वाभाविक उदासीनता देखी गई थी. लेकिन पूर्ण बहुमत से दूर रहने के बाद जब भाजपा को यह समझ आ गया कि विपक्षी एकजुटता और विशेष रूप से जातिगत जनगणना व सामाजिक न्याय का नैरेटिव उसकी हिंदू एकता की बुनियाद को कमजोर कर रहा है, तब वैचारिक मोर्चे पर संघ प्रमुख के आभामंडल का सहारा लिया गया. संघ प्रमुख द्वारा विदेशी ताकतों, रिजीम चेंज की साजिशों और आंतरिक बिखराव की जो बातें कही गईं, वे राजनीतिक रूप से सरकार को एक अभेद्य सुरक्षा कवच प्रदान करती हैं. इसके विपरीत, संघ और सरकार के समन्वय को करीब से देखने वाले विश्लेषकों का मानना है कि यह बदलाव कोई एकतरफा समर्पण या किसी के लिए महज ढाल बनने का प्रयास नहीं है, बल्कि दोनों पक्षों के बीच उपजी एक अत्यंत परिपक्व और स्वाभाविक रणनीतिक समझ है. संघ प्रमुख ने जहाँ एक तरफ वैश्विक चुनौतियों के मुद्दे पर सरकार के स्टैंड को वैचारिक मजबूती दी, वहीं दूसरी तरफ यह याद दिलाना भी नहीं भूले कि देश को केवल नेता या शासन-प्रशासन नहीं चलाते, बल्कि समाज चलाता है. सत्ता के कारण आने वाले विकारों के प्रति सचेत करने वाली यह टिप्पणी इस बात का सीधा प्रमाण है कि संघ के भीतर सत्ता जनित केंद्रीयकरण को लेकर आज भीएक गहरी असहजता मौजूद है. संघ खुद को सरकार के अधीन नहीं मानता, बल्कि खुद को राष्ट्र का अंतिम मार्गदर्शक समझता है.

इन्फॉर्मेशन टेररिज्म का नया खतरा

देश में तमाम तरह के आतंकवाद के बाद अब इन्फॉर्मेशन टेररिज्म का खतरा मंडरा रहा है. भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा है कि अगर हर कोई खुद को पत्रकार बताने लगेगा, तब समस्याएं पैदा होंगी. उनकी पीठ में शामिल एक अन्य जस्टिस जॉयमाल्या बागची ने कहा कि अदालत इस बात की जांच करेगी कि क्या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मतलब यह है कि हर व्यक्ति खुद को पत्रकार बता सकता है? इसी कड़ी में सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने इस बात पर जोर दिया है कि अब पत्रकारों की पहचान करना मुश्किल हो रहा है. यह पता नहीं चलता कि कौन रील बनाने वाला है और कौन स्वतंत्र पत्रकार? हर कहीं इस बात पर चिंता है कि देश में इस समय मीडियाकर्मियों खासकर पत्रकारों की संख्या काफी तेजी से बढ़ रही है. ऐसी सूचना देने वालों की भीड़ बढ़ रही है, जो तेजी से खुद को चर्चित होते हुए देखना चाहते हैं और आंदोलनों, सामाजिक समारोहों, आपदा के समय, सोशल मीडिया में, इंटरनेट की दुनिया में हर प्रकार की सूचनाओं को प्रिंट तथा डिजिटल मीडिया से पहले देने को बेताब रहते हैं. गूगल या यू-ट्यूब पर इस तरह की सूचनाएं तो पहले से ही थीं, जिन पर विश्वास करना मुश्किल होता है, अब रील के रूप में खुलेआम पेश की जा रही हैं. किसी अभिनेत्री की मौत, किसी राजनेता की बीमारी या मौत, किसी पर खुद का एनालिसिस और कई बार तो अंतरराष्ट्रीय स्तर के मामलों पर ऐसी सूचनाएं आती हैं कि उन्हें सुनने-पढ़ने वाला सन्न रह जाता है. एआई की मदद से इन्हें और भड़काऊ खबर बना दिया जाता है. इनमें फोटो को भी जोड़ दिया जाता है, जिससे देखने-सुनने या पढ़ने वालों की संख्या बढ़े. नेपाल में जब बाढ़ का प्रकोप आया तो तमाम माइक थामें और सूचना देने वाले घुटने तक कीचड़ में उतरकर सूचनाएं प्रेषित कर रहे थे, बाद में उनको वहां के स्थानीय निवासियों ने सुरक्षित बाहर निकाला. भारत में मीडिया में काम करने वाले पत्रकारों की संख्या का वास्तविक आंकड़ा आज तक तैयार नहीं हुआ है. यहां तक कि केंद्र या राज्य सरकारें भी ऐसे आंकड़े पेश नहीं करतीं. उनके पास जो सूचना होती है, वह उन पत्रकारों की होती है, जो या तो राज्य स्तर पर मान्यता प्राप्त हैं या पीआईबी के स्तर पर मान्यता प्राप्त हैं.



-मनोज वार्ष्णेय

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

दफन हो गया समाजवाद, अब सभी ओर पूंजीवाद

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, देश में एक समय ऐसा भी था, जब समाजवाद शब्द बहुत प्रचलित था. तब डॉ. राममनोहर लोहिया, आचार्य नरेंद्र देव, आचार्य कृपलानी, एच. वी. कामथ, एस. एम. जोशी, मधु दंडवते, मधु मधु लिमये के नाम बहुत सुने जाते थे. प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरू ने भी सोशलिस्टिक पैटर्न ऑफ सोसाइटी अपनाया था. मूल भावना यही थी कि राष्ट्र की संपत्ति पर समाज का हक हो. वह कुछ खास पूंजीपतियों के हाथों में केंद्रित न रहे. कम्युनिज्म हिंसा में विश्वास रखता था जबकि समाजवाद अहिंसक था.'

हमने कहा, 'तब लोग समाजवाद के नाम पर चंदा बटोरते थे. वह लोगों से कहते थे- समाजवाद आ रहा है जिसके लिए तैयारी करनी है. पैसा दो. अज्ञानी लोग समझते थे कि समाजवाद किसी नेता का नाम है. वह बार-बार चंदा देते थे लेकिन समाजवाद के दर्शन नहीं होते थे. वह बस आता ही रहता था. कुछ लोगों ने तब समाजवाद का अर्थ लगाया था कि अपने अपने समाज या जाति को आगे बढ़ाओ. तब रूस भी यूनाइटेड सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक कहलाता था.'

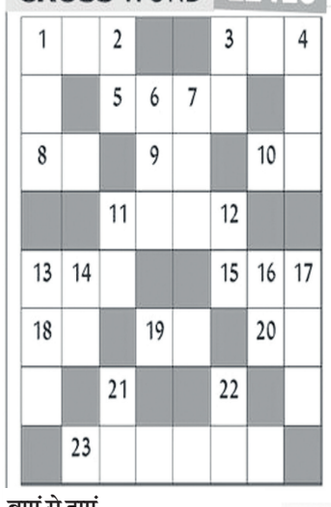


पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, जनसंघियों ने भी इमरजेंसी के दौरान जेल में रहते हुए समाजवादियों से दोस्ती की थी. दोनों ने मिलकर जनता पार्टी बनाई थी जिसमें कांग्रेस के असंतुष्ट नेता मोरारजी देसाई, चौधरी चरणसिंह व जगजीवनराम भी शामिल हो गए थे. जब अटलबिहारी वाजपेयी और आडवाणी के आरएसएस से गहरे संबंधों को लेकर समाजवादियों ने दोहरी सदस्यता का मुद्दा उठाकर आपत्ति जताई तो जनता पार्टी टूट गई. अटल-आडवाणी ने 1980 में भारतीय जनता पार्टी बना ली. यह सारा कांड राजनारायण और मधु लिमये की वजह से हुआ जो कि संघ को सांप्रदायिक मानते थे.'

हमने कहा, 'समाजवादी पार्टी या सपा आज भी अखिलेश यादव के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में दूसरे नंबर की हैसियत रखती है. वह 2027 के विधानसभा चुनाव में राममंदिर चंदा चोरी, पेपरलीक, वोट चोरी जैसे मुद्दों को लेकर बीजेपी को कड़ी टक्कर देगी.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बहुत मजबूत हैं. सपा खंडहर हो चुकी है. वैसे कहावत है कि खंडहर बता रहे हैं कि इमारत कभी बुलंद थी! आज का जमाना अंबानी और अदाणी जैसे बड़े पूंजीपतियों और कॉरपोरेट का है. समाजवाद काफी पहले छूमंतर हो चुका है.'

शब्द-सागर CROSS WORD 12416



बाएं से दाएं
1. व्यक्ति पदार्थ आदि की आकृति, स्वभाव 3. अंदर, में 5. विवाह आदि पर रात भर जागना 8. ताकत, बल 9. महीना, मास 10. अवश्य होकर रहने वाली घटना या बात 11. मधुर स्वर 13. ज्वर 15. पत्थर आदि का वह रंगीन चमकीला टुकड़ा जो शोभा के लिए आभूषण-अंगूठी आदि में जड़ा जाता है 18. छोटे-छोटे पेड़ों का समूह 19. पानी में रहने वाला एक प्रकार का कीड़ा जो जीवों के शरीर में चिपककर उनका रक्त चूसता है 20. निश्चित ठहराया हुआ, निर्णात 23. वह विद्यालय जहां उच्च शिक्षा दी जाती है

ऊपर से नीचे
1. मातृभूमि, अपना देश 2. किंतु, लेकिन, गैर, पंख 3. किसी तरल पदार्थ अथवा पानी से तर या आर्द्र 4. रात, रात्रि 6. सदाबहार वृक्ष 7. विष 11. हाथ 12. जंगल 13. अग्नि को शांत करना 14. समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो 16. वह जो गाया जाए, गाना 17. नेता, अगुआ, सरदार 21. मुक्त, बंधनों से छूटा हुआ 22. चमड़ा त्वचा

Solution 12415

चि	र	का	ली	न		प्र	ज्ञा
ल		ज	न				ने
बि	गु	ल		सि		अ	श्व
ला	ल			या	या	व	र
	द	र	द	र		धा	
प्र	स्ता	व	ना		कु	र	ना
ति			द		प्र	णा	म
भा	ग्य	वा	न		था		क

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

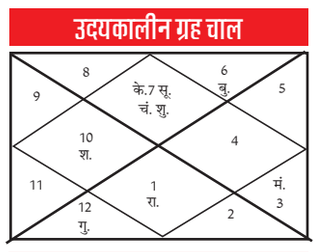
वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक योजनाओं में सुधार होगा. मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी. वर्ष के मध्य में भाईयों के सहयोग से शत्रु पक्ष परास्त होगा. वाहन पशु आदि से लाभ होगा. आर्थिक क्षेत्र में कमी के कारण योजनायें वाधित होंगी. वर्ष के अन्त में वाणी में कठोरता एवं क्रोध में वृद्धि होगी. प्रियजनों के कारण हानि हो सकती है.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को वाहन पशु आदि का लाभ होगा, भाईयों के सहयोग से शत्रु पक्ष परास्त होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक योजनाओं में पूँजी निवेश होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को प्रियजनों की वाणी में कठोरता एवं क्रोध में वृद्धि होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को योजनाओं में बाधा होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को यात्रा में उठाईगीरों से सावधानी रखना हितकर रहेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को सराहनीय कार्यों का लाभ मिलेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक परोपकारी स्वाभाव का होगा, परिश्रमी लगनशील उत्साही, और निष्ठावान होगा, पिता के साथ बैचारिक मतभेद हो सकते है, किन्तु बाद में उनके प्रति झुकाव रहेगा, कृषि, मकान, वाहन, आदि का सुख रहेगा, कृषि क्षेत्र में उन्नति होगी.

उदयकालीन ग्रह चाल



पंचांग

रा.मि. 01 संवत् 2083 आश्विन शुक्ल द्वादशी भृगुवासरे दिन 11/59, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे रात 7/52, ध्रुव योगे रात 9/59, बालव करणे सू.उ. 6/21, सू.अ. 5/39, चन्द्रचार कुम्भ दिन 1/41 से मीन, पर्व- प्रदोष व्रत, शु.रा. 11, 1, 2, 5, 6, 8 अ.रा. 12, 3, 4, 7, 9, 10 शुभांक- 4, 6, 0.

व्यापार भविष्य

आश्विन शुक्ल द्वादशी को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, के भाव में 30 से 40 रूपये की तेजी होने की संभावना है, धान्यों के भाव में स्थिरता रहेगी, रूई, सूत, कपास, वस्त्र, जूट, पाट, बारदाना, के भाव में मंदी होगी, गुड़ खांड़ में तेजी होगी, भाग्यांक 3421 है.

मेष- वैवाहिक चर्चाओं में सफलता मिलेगी, मित्रों की कहासुनी का मलाल रहेगा, दायित्वों की पूर्ति होगी, व्यवसायिक क्षेत्र में लाभ होगा.

वृषभ- नाराज चल रहे लोगों को मनाना मुश्किल होगा, दिखावे के कारण खर्च अधिक होगा, पूज्य व्यक्ति के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, भ्रमण मनोरंजन का योग है.

मिथुन- किसी की सिफारिश से रूका कार्य पूरा होगा, ऐसा कार्य बनेगा, जिससे निजी सुख में वृद्धि होगी, उठाईगीरों से सावधानी रखें.

कर्क- सामाजिक जीवन में मान सम्मान बढ़ेगा, कामकाज को लेकर व्यस्त रहेंगे, संतान संबंधी सुखद समाचार की प्राप्ति होगी, यात्रा,देशाटन वाहन सुख प्राप्त होगा.

सिंह- जोखिम के कार्यो से बचें, पारिवारिक आयोजन से प्रसन्नता होगी, पदोन्नति में सुख का अनुभव होगा, उलझनों के साथ सफलता मिलने का योग है.

कन्या- अपूर्ण समाचारों पर लिये गये फैसले बदलना पडेंगे, भौतिक सुख सुविधा पर खर्च संभव है, मांगलिक कार्यो में सफलता मिलेगी.

तुला- धीमी शुरूआत के बाद भी कार्यक्षेत्र में अच्छी सफलता मिलेगी, मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी, संतोष बना रहेगा.

वृश्चिक- नये मकान पर विचार होगा, किसी का सहयोग लाभदायक रहेगा, आर्थिक क्षेत्र में उननति होगी, किसी अभिन्न मित्र से भेंटवार्ता करनी पड़ेगी.

धनु- निजी कार्यो को टालने से समस्या बढ़ सकती है, बड़े आयोजन पर विचार विमर्श होगा, खानपान की अनियमितता रहेगी, स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

मकर- युवाओं को अच्छी सफलता के योग हैं, कार्यक्षेत्र में परेशानी हो सकती है, संतान के कार्यों में व्यय होगा, आर्थिक मामलों में सावधानी बांछनीय.

कुम्भ- नई जिम्मेदारी से आप परेशान हो सकते हैं, विवाद से बचना चाहिये, पारिवारिक सुख एवं सहयोग में वृद्धि होगी, मांगलिक कार्य बनेगा.

मीन- रूकी योजनायें फिर शुरू हो सकती हैं, दौड़धूप से स्वास्थ्य प्रभावित होगा, सामाजिक प्रतिष्ठा बनी रहेगी, ऐसा कोई कार्य न करें, जिससे आपके मान सम्मान में कमी हो.

SUDOKU 7548

	9				6			
	1					2		
5			7				3	
			4					6
		3				9		
4					8			
	7				9			8
		2					1	
			3				4	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7547

6	5	8	9	1	4	2	7	3
1	2	7	3	5	8	6	4	9
3	4	9	7	2	6	1	5	8
2	3	6	1	4	5	9	8	7
8	9	5	2	7	3	4	1	6
4	7	1	6	8	9	3	2	5
7	6	4	5	3	1	8	9	2
9	8	2	4	6	7	5	3	1
5	1	3	8	9	2	7	6	4